डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान

11–अशोक रोड, नई दिल्ली

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संरसंघचालक मा. श्री मोहनराव भागवत का रामलीला मैदान नई दिल्ली में भव्य अभिनंदन समारोह

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का सरसंघचालक बनने के बाद संघ प्रमुख मा. श्री मोहनराव भागवत का 31 मार्च 2009 को रामलीला मैदान नई दिल्ली में संघ की दिल्ली शाखा द्वारा सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया।

नई दिल्ली के रामलीला मैदान में आयोजित अभिनन्दन समारोह को संबोधित करते हुए मा. श्री मोहनराव भागवत

इस अवसर पर दिल्ली प्रदेश रा.स्व. संघ के संघचालक श्री रमेश प्रकाश ने कहा कि नए संघ प्रमुख का परिचय यह है कि आप बाल्यकाल से ही संघ के स्वयंसेवक रहे हैं।आपके दादा जी और पिता जी जो संघ में सक्रिय रहे हैं, वही विरासत आपको प्राप्त हुई है। पशु विज्ञान में डाक्ट्रेट प्राप्त करने के साथ आप संघ में बौद्धिक प्रमुख के साथ–साथ शारीरिक प्रमुख भी रहे हैं। बिहार में क्षेत्र संचालक भी रहे हैं और विगत 9 वर्षों से सरकार्यवाह के नाते हमारा मार्गदर्शन कर रहे थे। अब भी आप न केवल स्वसंसेवकों का ही अपितु पूरे देश का अपनी बहुमुखी प्रतिभा के बल पर मार्गदर्शन करेंगे।जहां तक नए सरकार्यवाह जी का प्रश्न है तो वे भी परिचय के मोहताज नहीं हैं, श्री सुरेश राव (भैय्या जी) जोशी इन्दौर में पैदा हुए और मुम्बई से अपने संघ जीवन का शुभारंभ कर सेवा कार्यों के बल पर आप इस महत्वपूर्ण दायित्व पर पहुँचे हैं।

क्षेत्रीय संघचालक डा. बजरंग लाल गुप्त ने नागपुर में हुए दायित्व परिवर्तन को ऐतिहासिक बताते हुए इसे न केवल स्वयंसेवकों के लिए बल्कि सभी के लिए प्रेरणादायी बताते हुए उस घटना का साक्षी होने के नाते विस्तृत चर्चा करते हुए कहा कि – 21 मार्च को महाराष्ट्र की धरती पर सामाजिक संगठनों के इतिहास में एक अनूठा, अद्वितीय, बोधप्रद

और अनुपम पाठ लिखा गया, प्रत्येक सामाजिक संगठन एवं समाज कार्य में लगे व्यक्ति को यह पाठ याद रखना चाहिए।

प्रातःकाल का सत्र था, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संविधान के अनुसार प्रत्येक तीन वर्ष के बाद सरकार्यवाह का चयन होता है, मा. मोहनराव भागवत जी ने आग्रह किया कि मेरा कार्यकाल पूरा हो रहा है और अब नए व्यक्ति का चयन होना चाहिए। तत्कालीन सरकार्यवाह श्री मदनदास देवी को यह दायित्व दिया गया। मदनदास देवी जी प्रक्रिया के विषय में कुछ कहते इससे पूर्व मा. सुदर्शन जी ने संकेत करके कुछ कहा। हम सभी प्रतिनिधि टकटकी लगाकर देख रहे थे तभी सुदर्शन जी ने बात रखी कि ''मैं पिछले 9 वर्षों से कार्य कर रहा हूँ किन्तु आयु की सीमा व स्वास्थ्य के कारण जितना प्रवास व प्रयास होना चाहिए वह अब संभव नहीं हो पा रहा है। बेशक दायित्व से मुक्ति कोई अनिवार्यता नहीं, किन्तु अपना कार्य और अधिक गति से बढ़े। प्रवास और परिश्रम की दृष्टि से जो सब प्रकार कुशल, योग्य व्यक्ति है और सरकार्यवाह का दायित्व जो निभाते आए हैं ऐसे मोहनराव भागवत अब संघ प्रमुख की भूमिका निभाएं ऐसा मेरा आग्रह है''।

आज के युग में जब कि छोटी–छोटी संस्थाओं में भी पद के लिए मारामारी होती है विश्व के सबसे बड़े संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में दायित्व का परिवर्तन सहजता से और गरिमामय ढंग से हो गया, इसको शब्दों में वर्णन करना कठिन है। मैं बारीकी से मा. सुदर्शन जी के मुखमंडल पर उभरने वाले भावजगत को देख रहा था। एकदम आश्वस्तिपूर्ण, निरपेक्ष वातावरण में उन्होंने यह घोषणा की कि ''संघ का कार्य रीति–नीति से चलना चाहिए'' जिनके कंधों पर मैं यह दायित्व दे रहा हूँ, उन हाथों में और कंधों में इसको ग्रहण कर और अधिक प्रभावी बनाने की क्षमता है। सभी वरिष्ठ लोगों से मैंने परामर्श कर लिया है और सभी इस बात पर सहमत हैं।''

सर्वसम्मति से दायित्व परिवर्तन के बाद मा. भागवत जी ने मा. सुदर्शन जी सहित विनम्र भाव से वरिष्ठ जनों के चरणस्पर्श कर आशीर्वाद लिया। प्रतिनिधियों को नमस्कार करते हुए संघ स्थान एवं संघचालक के आसन को प्रणाम किया। नए दायित्व को सबके सहयोग से निभाने की उन्होंने बात की तथा पूर्व संघ प्रमुख मा. सुदर्शन जी के अनुभव का सर्वदा लाभ उठाने का विश्वास दिलाया।

सभी स्वयंसेवक जानते हैं कि हमारे यहां दायित्व का परिवर्तन कोई अनूठा नहीं होता, किस दृष्टि से किस मनोभाव से होता है यह प्रमाण इस बार भी नागपुर में मिल गया। गंगा की पुण्यधारा का प्रवाह जब चलता रहता है तो कौन सा जलकण पहले आया और कौन सा बाद में, उनमें कोई अलगाव बिलगाव या अंतर नहीं होता, धारा लक्ष्य की ओर बहती है। उसी प्रकार हमारे दायित्व परिवर्तन की परंपरा और बढ़ती है, हमारे दायित्व परिवर्तन की परंपरा और संघ की पूरी कार्य पद्धति भी लक्ष्य के प्रति समर्पित होती है। संघ के तीन प्रमुखों के दायित्व परिवर्तन का साक्षी रहते हुए मैंने यह स्वयं देखा है, जब पूज्य बाला साहब देवरस ने स्वास्थ्य कारणों से पूज्य रज्जू भैया को, पूज्य रज्जू भैय्या ने इन्हीं कारणों से मा. सुदर्शन जी को और अभी मा. सुदर्शन जी ने भी आयु और स्वास्थ्य के इसी कारण से मा. श्री मोहनराव भागवत जी को निश्छल भाव से यह शीर्ष दायित्व प्रदान किया।

हमारे नवनियुक्त संरसंघचालक मा. भागवत जी को संघ के संस्कार परिवार से , विरासत में प्राप्त हुए हैं। उनके व्यक्तित्व की निर्मिति संघ की शाखा की मिट्‌टी से हुई है। अ.भा. शारीरिक प्रमुख के नाते हिमाचल प्रदेश के पौंठा साहब में एक अभ्यास वर्ग में हमने उनके शारीरिक और बौद्धिक दोनों ही समन्वित रूपों को प्रत्यक्ष देखा। शरीर की बारीकियों को किस प्रकार स्वयंसेवकों के गले उतारना है और साथ ही राष्ट्रीयता के तत्व मर्मज्ञ का रूप भी हमने साक्षात देखा। उसके पश्चात 9 वर्ष तक सहकार्यवाह के रूप में उनकी भूमिका तो सर्वविदित ही है।

संघ का कार्य सरल कार्य नहीं है। अनेक कठिनाइयां, चुनौतियां, समस्याएं व सवाल प्रत्येक दिन सामने आते हैं। इन सबका समाधान करने वाला नेतृत्व हमारे समक्ष सुदर्शन जी तक दिखाई पड़ता है। पथिक की परीक्षा कंटकाकीर्ण मार्ग को दूर कर आगे बढने अथवा प्रतिकूल जलधारा में से नाव को सुरक्षित निकाल लाने से ही सफल प्रमाणित होती है। स्वयंसेवकों अथवा प्रबुद्ध नागरिकों की गोष्ठियों में विविध विषयों का प्रतिपादन आत्मविश्वास के साथ मा. भागवत जी करते हैं और उस विश्वास का रहस्य है उनकी कार्य पद्धति। वैचारिक सैद्धांतिक निष्ठा के विषय में उनके मन में कोई भ्रम नहीं रहता। इसी आत्मविश्वास, कार्यकर्ताओं के संच निर्माण में कुशल अपने पूर्व और वर्तमान दोनों सरसंघचालकों मा. भागवत जी और मा. सुदर्शन जी का हम हार्दिक अभिनंदन करते हैं।

अभिनन्दन समारोह में उपस्थित संघ के स्वयंसेवक

स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए देश की राजधानी दिल्ली में संघ प्रमुख के रूप में उपस्थित मा. मोहनराव भागवत ने कहा कि– आत्मीय स्वयंसेवक बंधुओं तथा मीडिया के प्रबुद्ध जनों! संघ में परिवर्तन सहज रूप से होता है। इस बात को हम जानते हैं, लेकिन इस पर विश्वास करने के लिए ऐसे प्रसंगों को देखना भी जरूरी है क्योंकि सारी दुनिया ही प्रत्यक्ष देखे बिना आज केवल अनुमान लगाती है। एक बार एक व्यक्ति टीले से ऊंचे होकर देख रहा था। नीचे उसको देखने वाले लोग अपने आप में उसके विषय में तरह–तरह की बातें कर रहे थे। कोई कह रहा था कि वह इतनी ऊंची जगह पर खड़ा होकर सूर्यास्त देख रहा है, कोई कह रहा था कि वह ढलते सूर्य की रोशनी से प्रभावित खेत–खलिहानों की चमक देख रहा है तो कोई कह रहा था कि वह दूर से आने वाले किसी बटोही की राह देख रहा है। लोगों ने जब उससे कारण पूछा तो इन सभी कारणों को नकारते हुए उसने उत्तर दिया कि ऐसी काई बात नहीं है, मेरे मन में इच्छा हुई और मैं खड़ा हो गया, इसके लिए किसी कारण की क्या आवश्यकता?

तो इस प्रकार उस खड़े होने वाले व्यक्ति के मन की अनुभूति जिसको होगी वास्तविकता वही समझेगा। बाहर की भाषा में पद होते होंगे लेकिन संघ में एक ही पद है और वह है स्वयंसेवक। अपने जीवन में एक भी बार जिस व्यक्ति ने भगवे के सामने प्रणाम कर लिया वह संघ की सूची में आ गया। सदस्य रहने न रहने का अधिकार केवल सरसंघचालक को दिया गया है, लेकिन हमारे यहां पांच सरसंघचालक हो गए एक बार भी किसी ने इस अधिकार का प्रयोग नहीं किया। जन्म से मृत्यु तक सभी स्वयंसेवक हैं, मैं भी, संगठन बड़ा है तो कार्य विभाजन के तहत दायित्व तो मिलेगा ही। अपनी ओर से सब बातें रखने के बाद भी पूज्य सुदर्शन जी ने मुझ पर विश्वास किया है, इसके लिए मैं कृतज्ञ हूँ।

मेरे विषय में पुष्पिता भाषा में क्षेत्र संघचालक जी ने कह दिया हो किन्तु मैं गलतफहमी में नहीं रहता। अपने पांचों सरसंघचालकों के अनुरूप मैं भी हूं, इस भ्रम में मैं नहीं हूँ। वैसे भी हमारे यहां सरसंघचालक के बाद कौन? ऐसी कोई धारणा ही नहीं है, जो सक्रिय है और उपलब्ध है, अभिनन्दन की कोई बात नहीं है, यह पराक्रम भी नहीं है, गुरुभार है। आत्मीय होने के कारण यह आपके स्नेह और ममता का परिचायक है। संघ की परिपाटी है सरसंघचालक को प्रणाम देना। कम समय में, कार्यदिवस पर पूर्ण गणवेश में इतने स्वयंसेवक यहां उपस्थित हुए हैं, कार्यक्रम के बाद भी हमारी संख्या ऐसी ही रहे इस पर अवश्य चिंतन करना चाहिए। एक समय था जब एक भय पैदा हो गया था। जब यह तय हो गया कि करना है तो भय भी चला जाएगा। संघ में प्रत्येक व्यक्ति का कार्य सबका परिणाम बनता है। संघ प्रमुख भी संघ के स्वयंसेवकों के मन का अनुनायित्व करता है।

संघ के संस्थापक डा. हेडगेवार को जब विधिवत रूप से संघ स्थान पर पहली बार प्रणाम किया गया था तो उन्होंने स्वयंसेवकों के लिए अपनी पहली डायरी में लिखा था कि ''मैं तो आपके साथ पंक्ति में खड़े होकर कार्य करने के पक्ष में हूँ। यदि मुझे उत्तरदायी बनाया गया है तो मैं आप सभी के साथ दायी के रूप में रहूंगा जिस क्षण आप लोग मुझसे उपयुक्त व्यक्ति पा लेंगे मैं तत्क्षण उसके कंधे पर यह दायित्व दे दूंगा।''

तो ये अपने परिवार का जीवन वृत्त है, कुल वृत्त है। समय के अनुसार अपने बाह्य रूप को बदलते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ शाश्वत मूल्यों को लेकर चल रहा है। दुनिया में किसी सामाजिक स्वयंसेवी संगठन का 50–55 वर्षों तक इतना विरोध नहीं हुआ। अनुकूलता के दिन भी आए, प्रसिद्धि भी हुई और स्वयंसेवकों को सम्मान भी मिला, लेकिन कभी भी राह न भटकने वाले स्वयंसेवकों की निष्ठा से अब संघ की विजय सुनिश्चित है। संघ अपनी विजय नहीं चाहता, राष्ट्र की विजय चाहता है। हमारी विजय विश्व को कल्याण, सुख व समृद्धि देगी। मानव के स्वभाव की तरह भारत देश है, जिसका स्वभाव उसकी संस्कृति है, वह जनमंगलदायिनी संस्कृति, किसी को पराया नहीं मानती। कोई उस संस्कृति को भारतीय कहता है, कोई आर्य तो कोई हिन्दू संस्कृति किन्तु निहितार्थ तो वही है। इस देश की पहचान ही हिन्दू हैं, वे अपने आपको जानें और इसके गौरव को पहचानें। पशु अपने लिए जीता है और मानव सभी के लिए जीता है। जितना अधिक जिसकी आत्मीयता का दायरा होगा सारे विश्व के लिए वह महात्मा होगा, ऐसे ही व्यक्ति को हम मूर्तिमंत भगवान मानते हैं। यह व्यक्ति इस भूमि पर उपजा, यह बन्धु भाव है। जब कट्टर लोग दुनिया में आए तो

उन्होंने विशेष नाम दे दिया। हमारा नाम रखा गया है कोई शपथपत्र (एफिडेविट) देकर हमने कोई बदलाव नहीं किया है। लेकिन हिन्दुत्व हमारे राष्ट्र की पहचान है, यह बाजार नहीं एक वृहद् विचार है, एक परिवार है, ऐसे उदार विचार की आवश्यकता सारी दुनिया को है। भारत सबको यह दिखा सकता है, लेकिन अपनी पहचान, विरासत उसे जीवन व्यवहार में आदर्श रूप में दिखानी होगी। संस्कृति की रक्षा करने वाला समाज ही होता है, वह अपनी संस्कृति को आचरण में उतारता है, दूसरों की नकल करके कोई देश बड़ा नहीं हुआ। विचारधारा, नेता, नारा, पार्टी सरकार, अवतार अपने स्वत्व के बल पर खड़े हुए, जब समाज ने हाथ बढ़ाकर इनका साथ दिया तभी वे सफल हुए। सब कुछ बदलकर हमने देख लिया है। जब समाज का प्रत्येक व्यक्ति मन के सारे भेदों को मिटाकर संगठित होकर एकजुट होता है तब राष्ट्र प्रगति करता है।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डा. कलाम के प्रतिपादन में तीनों तत्वों का उल्लेख होता है उनमें सर्वप्रथम लोकजागरण की शक्ति पर बल दिया जाता है। अभी कुछ दिन पूर्व बंगलौर में एन्साइक्लोपीडिया ऑफ हिन्दुत्व'' के लोकार्पण के अवसर पर उन्होंने कहा कि हिन्दुत्व का मार्ग सर्वश्रेष्ठ है और भारत ही नहीं दुनिया के प्रत्येक देश को हिन्दू धर्म से सीख लेनी चाहिए।

इसी प्रकार वर्गीस कूरियन का विचार है कि यदि इस देश की जनता को सही दिशा में प्रबोधित व संगठित नहीं किया गया तो कुछ समय बाद इस देश में न जाने क्या हो जाएगा। हमारा विचार भी नया नहीं है संघ पुराने प्रासंगिक विचारों को अनुभूतिसिद्ध और तर्कसिद्ध बनाकर सत्यमेव जयते के विचारयुक्त नारे पर विश्वास करता है। इसी विचार को अपने जीवन का ध्येय बनाने वाले लक्षाधिक स्वयंसेवक, ऐसे देवदुर्लभ कार्यकर्ता 83 वर्षों से राष्ट्र सेवा के कार्य में संलग्न हैं। तो हमारी पद्धति विजयित्री कार्य पद्धति है, लक्ष्य के साथ साधन और साध्य की एकरूपता वाली हमारी कार्यपद्धति है। जीवन का कोई अंग नहीं हैं जहां संघ के स्वयंसेवकों ने जनता की स्तुति व प्रशंसा न पाई हों। श्रीमद्भगवद्गीता में कर्म के जो पांच अधिष्ठान – कार्य, करण, अलग–अलग प्रकार की दुर्लभ चेष्टाएं और देव कृपा बताये गए हैं, इन्हीं पांच अधिष्ठानों को अपने पुराने विचारों के आधार पर नए काल सुसंगत आदर्श लेकर हम बढ़ें, आत्मविस्मृत लोगों को उनके स्वत्व का स्मरण कराएं, जो लोग निजी स्वार्थ के कारण स्वयं को हिन्दू नहीं मानते, हिन्दुस्थान के अंदर ऐसे सभी लोगों को अनुभूति करवाने की आवश्यकता है। आत्मीयता युक्त संपर्क तथा अपने आचरण के द्वारा सभी को सच्चा व पक्का हिन्दुत्व सिखाने की आवश्यकता है। आने वाली मानव पीढ़ी के लिए सुख, शांतिपूर्ण उत्कर्षमय जीवन के लिए ऐसे प्रतिरूप हमें अपने कर्तृत्व से खड़े करने हैं। मन से हम से किसी का विरोध नहीं है, हम उनके स्वार्थपूर्ण व्यवहार के प्रति दयाभाव रखें, जो मत्सरग्रस्त हैं उनका मत्सर विलुप्त करें और कुछ लोगों का जन्म ही संघ का द्वेष करने के लिए हुआ है उन पर भी हम दया करें। विजयित्री संघ शक्ति ने नए चरण में समर्पण, सहयोग और गुणनिष्ठा से ईश्वरीय शक्ति के साथ आप स्वयंसेवकों के साथ बढ़ना है, आपके साथ मैं भी बढ़ूंगा और इस प्रकार हम अपने ध्येय तक पहुंचेंगे। आप सभी का एक बार पुनः आभार। भारत माता की जय।